

श्री गौतम स्वामी पूजन

जय जय इन्द्रभूति गौतम गणधर स्वामी मुनिवर जय जय ।
 तीर्थङ्कर श्री महावीर के प्रथम मुख्य गणधर जय जय ॥
 द्वादशाङ्ग श्रुत पूर्ण ज्ञानधारी गौतम स्वामी जय जय ।
 वीर प्रभु की दिव्यध्वनि जिनवाणी को सुन हुए अभय ॥
 ऋद्धि सिद्धि मङ्गल के दाता मोक्ष प्रदाता गणधर देव ।
 मङ्गलमय शिव पथ पर चलकर मैं भी सिद्ध बनूँ स्वयमेव ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिन् अत्र मम् सन्निहितोभव भव वषट् ।

मैं मिथ्यात्व नष्ट करने को निर्मल जल की धार करूँ ।
 सम्यक्दर्शन पाऊँ जन्म-मरण क्षय कर भव रोग हरूँ ॥
 गौतम गणधर स्वामी के चरणों की मैं करता पूजन ।
 देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूँ नमन ॥
 ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्० ।

पञ्च पाप अविरति को त्यागूँ शीतल चन्दन चरण धरूँ ।
 भव आताप नाश करके प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ ॥गौ०॥
 ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चन्दम्० ।

पञ्च प्रमाद नष्ट करने को उज्ज्वल अक्षत भेंट करूँ ।
 अक्षय पद की प्राप्ति हेतु प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ ॥गौ०॥
 ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् नि० स्वाहा ।

चार कषाय अभाव हेतु मैं पुष्प मनोरम भेंट करूँ ।
 कामबाण विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ ॥गौ०॥
 ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम्० ।

मन वच काया योग सर्व हरने को प्रभु नैवेद्य वरुं ।
क्षुधा व्याधि का नाम मिटाऊँ मैं अनादि भव रोग हरुं ॥गौ०॥
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

सम्यक्ज्ञान प्राप्त करने को अन्तर दीप प्रकाश करुं ।
चिर अज्ञान तिमिर को नाशूँ मैं अनादि भव रोग हरुं ॥गौ०॥
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

मैं सम्यक्चारित्र ग्रहण कर अन्तर तप की धूप वरुं ।
अष्ट कर्म विध्वंस करुं प्रभु मैं अनादि भव रोग हरुं ॥गौ०॥
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मविनाशनाय धूपम् नि० स्वाहा ।

रत्नत्रय का परम मोक्ष फल पाने को फल भेंट करुं ।
शुद्ध स्वपद निर्वाण प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरुं ॥गौ०॥
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलम् नि० स्वाहा ।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य चरणों में सविनय भेंट करुं ।
पद अनर्घ्य सिद्धत्व प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरुं ॥गौ०॥
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य नि० स्वाहा ।

श्रावण कृष्णा एकम् के दिन समवशरण में तुम आये ।
मानस्तम्भ देखते ही तो मान मोह अध गल पाये ॥
महावीर के दर्शन करते ही मिथ्यात्व हुआ चकचूर ।
रत्नत्रय पाते ही दिव्यध्वनि का लाभ लिया भरपूर ॥
ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिप्राप्ताय गौतमगणधरस्वामिने अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

कार्तिक कृष्णा अमावस्या को कर्म घातिया करके क्षय ।
सायङ्काल समय में पाई केवलज्ञान लक्ष्मी जय ॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनीय का करके अन्त ।
अन्तराय का सर्वनाश कर तुमने पाया पद भगवन्त ॥
ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानप्राप्ताय गौतमगणधरस्वामिने अर्घ्य नि० स्वाहा ।

विचरण करके दुखी जगत् के जीवों का कल्याण किया ।
 अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा योगों का अवसान किया ॥
 देव बानवे वर्ष अवस्था में तुमने निर्वाण लिया ।
 क्षेत्र गुणावा करके पावन सिद्ध स्वरूप महान लिया ॥
 ॐ ह्रीं श्री मोक्षपदप्राप्ताय गौतमगणधरस्वामिने अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

जयमाला

मगध देश के गौतमपुर वासी वसु भूति ब्राह्मण पुत्र ।
 माँ पृथ्वी के लाल लाड़ले इन्द्रभूति तुम ज्येष्ठ सुपुत्र ॥
 अग्निभूति अरु वायुभूति लघु भ्राता द्वय उत्तम विद्वान् ।
 शिष्य पाँच सौ साथ आपके चौदह विद्या ज्ञान निधान ॥
 शुभ बैसाख शुक्ल दशमी को हुआ वीर को केवलज्ञान ।
 समवशरण की रचना करके हुआ इन्द्र को हर्ष महान ॥
 बारह सभा बनी अति सुन्दर गन्धकुटी के बोच प्रधान ।
 अन्तरीक्ष में महावीर प्रभु बैठे पद्मासन निज ध्यान ॥
 छियासठ दिन हो गये दिव्यध्वनि खिरी नहीं प्रभु की यह जान ।
 अवधिज्ञान से लखा इन्द्र ने “गणधर की है कमी प्रधान” ॥
 इन्द्रभूति गौतम पहले गणधर होंगे यह जान लिया ।
 वृद्ध ब्राह्मण वेश बना, गौतम के गृह प्रस्थान किया ॥
 पहुँच इन्द्र ने नमस्कार कर किया निवेदन विनयमयी ।
 मेरे गुरु श्लोक सुनाकर, मौन हो गये ज्ञानमयी ॥
 अर्थ भाव वे बता न पाये वही जानने आया हूँ ।
 आप श्रेष्ठ विद्वान् जगत में शरण आपकी आया हूँ ॥
 इन्द्रभूति गौतम श्लोक श्रवण कर मन में चकराये ।
 झूठा अर्थ बताने के भी भाव नहीं उर में आये ॥

मन में सोचा तीन काल, छः द्रव्य, जीव, षट् लेश्या क्या ?
नव पदार्थ, पंचास्तिकाय, गति, समिति, ज्ञान, व्रत, चारित क्या ?
बोले गुरु के पास चलो मैं वही अर्थ बतलाऊँगा ।
अगर हुआ तो शास्त्रार्थ कर उन पर भी जय पाऊँगा ॥
अति हर्षित हो इन्द्र हृदय में बोला स्वामी अभी चलें ।
शङ्काओं का समाधान कर मेरे मन की शल्य दलें ॥
अग्निभूति अरु वायुभूति दोनों भ्राता सङ्ग लिये जभी ।
शिष्य पाञ्च सौ सङ्ग ले गौतम साभिमान चल दिये तभी ॥
समवशरण की सीमा में जाते ही हुआ गलित अभिमान ।
प्रभु दर्शन करते ही पाया सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान ॥
तत्क्षण सम्यक्चारित धारा मुनि बन गणधर पद पाया ।
अष्ट ऋद्धियाँ प्रगट हो गईं ज्ञान मनःपर्यय छाया ॥
खिरने लगी दिव्यध्वनि प्रभु की परम हर्ष उर में आया ।
कर्म नाशकर मोक्ष प्राप्ति का यह अपूर्व अवसर पाया ॥
ओंकार ध्वनि मेघ गर्जना सम होती है गुणशाली ।
द्वादशांग वाणी तुमने अर्न्तमुहूर्त में रच डाली ॥
दोनों भ्राता शिष्य पाँच सौ ने मिथ्यात तभी हरकर ।
हर्षित हो जिन दीक्षा ले ली दोनों भ्रात हुए गणधर ॥
राजगृही के विपुलाचल पर प्रथम देशना मङ्गलमय ।
महावीर सन्देश विश्व ने सुना शाश्वत शिव सुखमय ॥
इन्द्रभूति, श्री अग्निभूति, श्री वायुभूति, शुचिदत्त, महान् ।
श्री सुधर्म, माण्डव्य, मौर्यसुत, श्री अकम्प्य, अति ही विद्वान् ॥
अचल और मेदार्य प्रभास यही ग्यारह गणधर गुणवान् ।
महावीर के प्रथम शिष्य तुम हुए मुख्य गणधर भगवान् ॥

छह-छह घड़ी दिव्यध्वनि खिरती चार समय नित मङ्गलमय ।
 वस्तुतत्त्व उपदेश प्राप्त कर भव्य जीव होते निजमय ॥
 तीस वर्ष रह समवसरण में गुन्था श्री जिनवाणी को ।
 देश-देश में कर विहार फैलाया श्री जिनवाणी को ॥
 कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः महावीर निर्वाण हुआ ।
 सन्ध्याकाल तुम्हें भी पावापुर में केवलज्ञान हुआ ॥
 ज्ञान लक्ष्मी तुमने पाई और वीर प्रभु ने निर्वाण ।
 दीप-मालिका पर्व विश्व में तभी हुआ प्रारम्भ महान ॥
 आयु पूर्ण जब हुई आपको योग नाश निर्वाण लिया ।
 धन्य हो गया क्षेत्र गुणावा देवों ने जयगान किया ॥
 आज तुम्हारे चरण कमल के दर्शन पाकर हर्षाया ।
 रोम-रोम पुलकित है मेरे भव का अन्त निकट आया ॥
 मुझको भी प्रज्ञा छैनी दो मैं निज पर में भेद करूँ ।
 भेदज्ञान की महाशक्ति से दुखदायी भव खेद हूँ ॥
 पद सिद्धत्व प्राप्त करके मैं पास तुम्हारे आ जाऊँ ।
 तुम समान बन शिव पद पाकर सदा-सदा को मुस्काऊँ ॥
 जय जय गौतम गणधर स्वामी अभिरामी अन्तरयामी ।
 पाप पुण्य पर भाव विनाशी मुक्ति निवासी सुखधामी ॥
 ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं नि० स्वाहा ।
 गौतम स्वामी के वचन भाव सहित उर धार ।
 मन, वच, तन जों पूजते वे होते भव पार ॥

(इत्याशीर्वादः)

